मुक्ति

की प्रक्रिया

तीसरा संस्करण

मिलाकरः

"मुक्ति" शब्द को उचित रीति से विभाजित करना

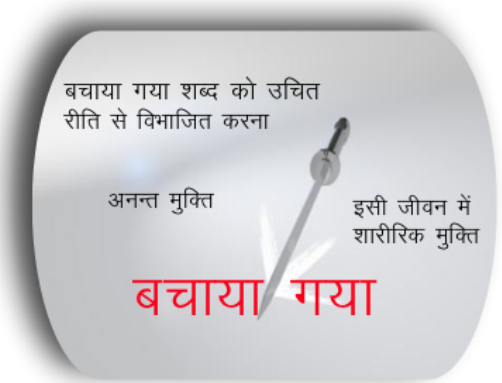

मुफ्त पुस्तक
बिक्री हेतु नहीं

जब प्रभु ने मुझे सेवकाई में बुलाया, तब उसने मुझे निम्नलिखित दर्शन दिया। मैं एक बहुत विशाल नदी पर जल-धारा के ऊपर की ओर जा रहा था, इसका स्रोत परमेश्वर का सिंहासन है। इसका जल बहुत ही निर्मल था और इस पानी के ऊपर मशीनी यंत्र थे। वहाँ दंत-चक्र (गरारीयाँ) आपस में फँसे हुए थे, और दंत-चक्र मशीनी शस्त्रों (पुरजों) आदि, के साथ आपस में बन्धे हुए थे। ये सभी मशीनी यंत्र, दंत-चक्र, आदि., कार्यात्मक थे। जिस प्रकार एक भाग चलता, तो दूसरे भाग भी चलते थे। ये मशीनी यंत्र मेरे आगे-आगे पानी पर तैर रहे थे, और जल-धारा में से नीचे की ओर जा रहे थे। इस तरह मैं परमेश्वर के सिंहासन की नदी के स्रोत में तैर रहा था।

परमेश्वर ने मुझे साधारणीय रूप से दिखाया, जो वह मुझे अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा सिखाने जा रहा था। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आप समझ जाएँगे, कि क्यों परमेश्वर ने मुझे यह दर्शन दिया, और क्यों मैंने इस पुस्तक को "मुक्ति की प्रक्रिया" नाम दिया है!

Roy Sauzek
रोय सौज़ेक

Take His Heart to the World Ministries

www.takehisheart.com
PO Box 532
Wellington KS 67152